सम्पूर्ण प्रक्रिया का मूल्यांकन

पाठ्यचर्या संरचना का अन्तिम सोपान प्रक्रिया के उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से मूल्यांकन करना है। उद्देश्यों के निर्धारण एवं स्पष्ट कथन, अधिगम अनुभवों एवं अर्न्तवस्तु के चयन तथा अर्न्तवस्तु के संसंधन एवं संगठन के पश्चात् पाठ्यचर्या को कार्यरूप दे दिया जाता है। पाठ्यचर्या को कार्य रूप देने के बाद यह भी जानना आवश्यक होता है कि उस पाठ्यचर्या से विद्यार्थियों में कितना अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन हुआ है। और कितना नहीं हो सका है। इस कार्य को मूल्यांकन की संज्ञा दी जाती है। पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के प्रमुख रूप से दो लाभ है-

(1) इसके द्वारा विद्यार्थियों से अपेक्षित तथा उनमें हो चुके व्यवहारगत परिवर्तनों की तुलना हो जाती है। इससे यह भी पता चल जाता है कि ज्ञान, अवबोध, कौशल, मूल्य अभिवृत्ति आदि सम्बन्धी उद्देश्य कहाँ तक पूर्ण हो सके हैं।

(2)- चूँकि पाठ्यचर्या की प्रक्रिया सतत् चलती रहती है। किसी वृत्त पर अंकित बिन्दुओं के समान उसके क्रमिक सोपान एक-दूसरे के बाद आते चले जाते हैं। अर्थात् इसका न कोई आदि होता है और न अन्त।

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन का तात्पर्य अधिक प्रयासों के परिणामस्वरूप उत्पन्न व्यवहारगत परिवर्तनों की प्रकृति, दिशा तथा सीमा के प्रमाण प्राप्त करना तथा उनको पाठ्यचर्या-प्रक्रिया के पक्षों में सुधार लाने के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रयुक्त करना है।

शिक्षा में मूल्यांकन के प्रमुख क्षेत्र निम्नवत् हैं-

(1) छात्रों में व्यवहारगत परिवर्तन तथा इन व्यवहारों को प्रभावित करने के लिए उत्तरदायी कारक -

(2) मूल्यांकन कार्यक्रम का छात्र-अभिप्रेरणा तथा अधिगम पर प्रभाव -

(3) पाठ्यक्रम प्रक्रिया के सभी पक्षों का मूल्यांकन -

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का अर्थ पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों, उद्देश्यों, विषयवस्तु, विधियाँ, छात्रों की जाँच के लिये मूल्यांकन पद्धति के मूल्यांकन से है। पाठ्यचर्या घटकों की अलग-अलग समीक्षा नहीं की जा सकती है क्योंकि प्रत्येक घटक अन्य घटकों से प्रभावित होता है। और उन्हें प्रभावित करता है।

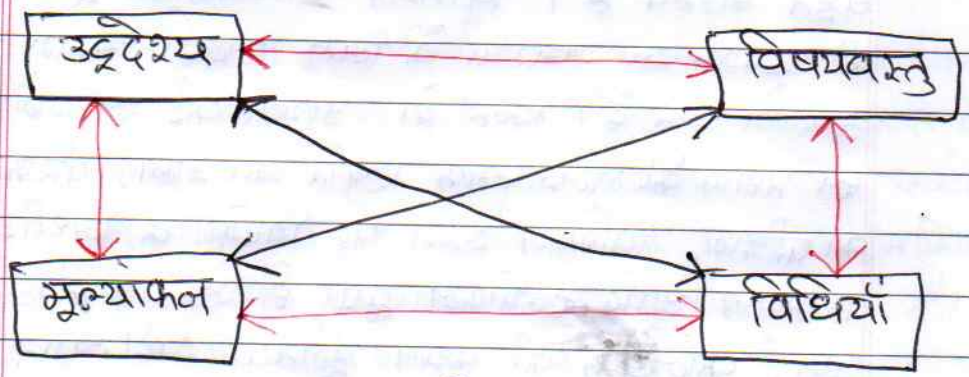

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या के पुनर्निवेश को संचित करना और उसके प्रयोग में पाठ्यचर्या में सुधार लाना है।

classmate
Date
Page

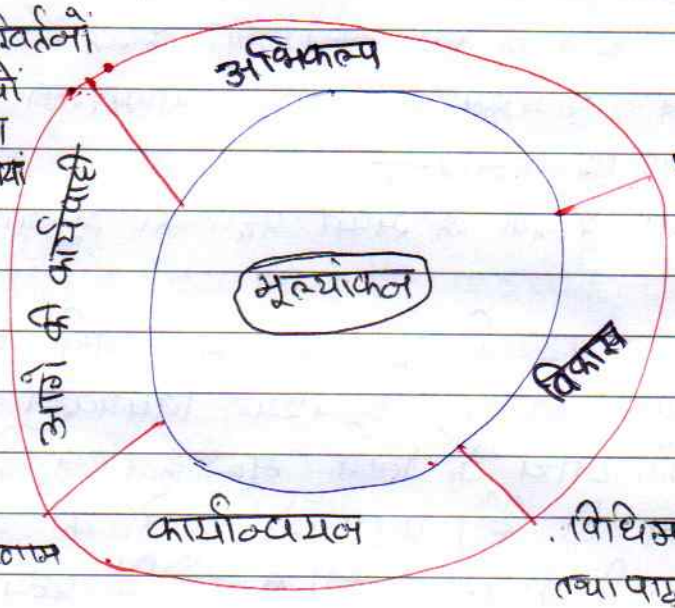

पाठ्यचर्या चक्र की सम्प्रत्ययात्मक रूप-रेखा।

पाठ्यचर्या - अनुसंधान के क्षेत्र में भी मूल्यांकन का बहुत महत्त्व है। विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा एक ही उद्देश्य या समस्या के लिए अलग-अलग उपागम अपनाये जाते हैं। किन्ही दो अथवा कई उपागमों के प्रभाव की तुलनात्मक स्थिति का ज्ञान, परिकल्पनाओं का परीक्षण, विभिन्न स्तरों पर विषयों के निर्धारण का प्रभाव आदि मूल्यांकन द्वारा ही सम्भव है। अतः कॉनबैक का कथन पूर्णतया सही लगता है कि मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण की परिशिष्ट न होकर अनिवार्य अंग है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

① सूक्ष्म स्तर पर मूल्यांकन प्रक्रिया — इसके अन्तर्गत पाठ्यचर्या के प्रत्येक विषय का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यह दो प्रकार से हो सकता है—

① निर्णय द्वारा -
② प्रेक्षण / अवलोकन द्वारा —

निर्णय के अन्तर्गत तीन बातें प्रमुख हैं-
पहली - शिक्षक द्वारा जो पाठ्यवस्तु पढ़ाई जा रही है।
दूसरी - छात्र द्वारा जो पाठ्यवस्तु कितनी समझी जा रही है।
तीसरी - निर्णय विषय विशेषज्ञ द्वारा होगा जो यह पता ~~लगायेगा~~ लगायेंगे की यह पाठ्यचर्या कितनी उपयुक्त है।

प्रेक्षण द्वारा निर्णय में पाठ्यचर्या मूल्यांकन करने के लिए एक टीम का गठन किया जाता है, जो पाठ्यचर्या को जाँच-परखकर इसका सारांश व सुझाव प्रस्तुत करती है व अगे की प्रक्रिया उपर्युक्त वर्णित प्रक्रिया अनुसार पूरी की जाती है।-

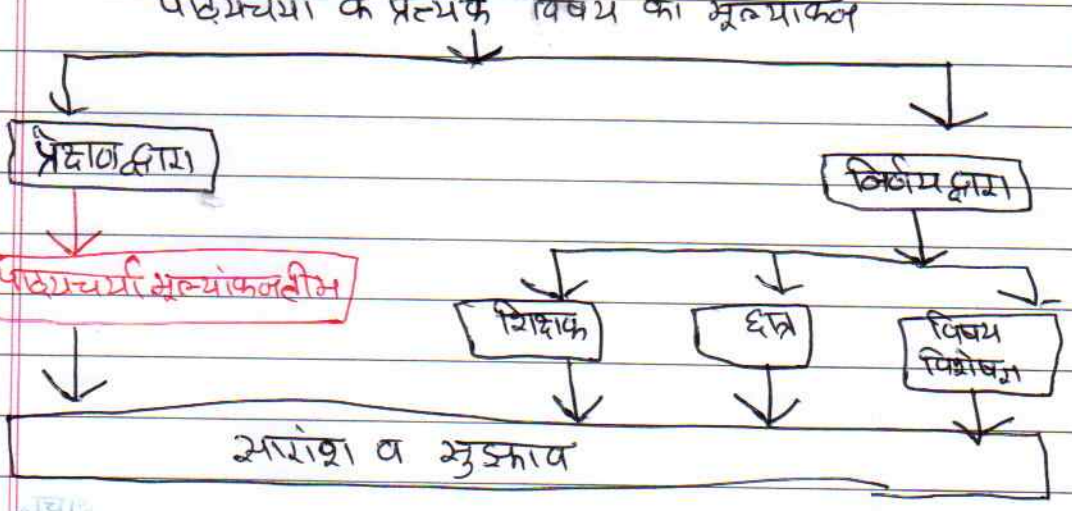

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान